

(4)

सद्भावना सप्ताह पर

राष्ट्र जब बढ़ने लगा था आपके नेतृत्व में ।
वृद्धि जब होने लगी थी, आपसी भ्रातृत्व में ।
हुए सब तत्पर बढ़े अगली शती की ओर थे ।
नए सर्जन हेतु उठते स्वर अहा चहुँ ओर थे ॥ 1 ॥

तभी हिंसा सर्पिणी चुपचाप आ पहुँची वहाँ ।
मिल रहा था बन्धुओं से लाल भारत का जहाँ ।
हुआ भीषण शब्द डूबा सभी कुछ आतंक में ।
भर लिया उसको भयावह मृत्यु ने फिर अंक में ॥ 2 ॥

हो गया है क्या हमें ऐसे नहीं थे हम कभी ।
त्याग तप निष्ठा क्षमा थे भारतीयों में सभी ।
स्त्रोत यह फूटा कहाँ से छल कपट का क्रोध का ।
क्या हुआ उस सभ्यता के धर्म के उस बोध का ॥ 3 ॥

नहीं जग यह चाहता यह देश गौरव युक्त हो ।
गरीबी असमानता अन्याय से यह मुक्त हो ।
रहेगा यदि शान्त होगा शक्तिशाली देश यह ।
बनेगा नायक धरा का छोड़ निर्धन वेश यह ॥ 4 ॥

भेद के विष बीज बोओ बढ़ाओ कुछ कलह को ।
भेज दो कुछ शस्त्र फिर आओ कराने सुलह को ।
यही है वह जाल जिसमें हमें फंसना है नहीं ।
द्वेष दलदल में हमें हे बन्धु धंसना है नहीं ॥ 5 ॥
पुनः यह पहचान लो बस एकता में शक्ति है ।
वही नर है मातृ भू में अचल जिसकी भक्ति है ।
कुचल दो उस शक्ति को जो मातृ भूमि विरुद्ध हो ।
द्रोह छल हिंसा करो तुम दूर भारत शुद्ध हो ॥ 6 ॥

बैलगाड़ी अब नहीं इस देश की पहचान है ।

दूर करना प्रविधि का अब पश्चिमी अभिमान है।
जगाकर तुम चल दिए इस देश को हे वीर वर ।
अब न ठहरेगें उड़ेगें व्योम को भी चीरकर ॥ 7 ॥

शिव कुमार मिश्र-